आडियो द्वारा शिक्षा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत एम0ए0 हिन्दी के माडल सिलेवस पर आधारित व्याख्यान माला। ये व्याख्यान माला भारत सरकार की बेवसाईट डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डाट साक्षात डाट ए सी डाट आई एन पर उपलब्ध है । इसमें वीडियों के साथ साथ आलेख भी समावेशित है।

आडियों द्वारा शिक्षा व्याख्यान माला के अन्तर्गत लीजिये सुनिये एम0ए0 हिन्दी के अंतिम वर्ष के विकल्प पेपर रधुवीर सहाय पर व्याख्यान। व्याख्याता है दिल्ली यूनीवर्सिटी की हिन्दी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डा0 कुमुद शर्मा

छात्र – नमस्ते मेम

डा0 कुमुद शर्मा – नमस्कार, कैसे हो तुम लोग (मेम बहुत अच्छे हैं) तो सुबह से तो आज आपकी आखिरी क्लास है ये (यस मेम) क्या पढ़ाना है मुझे पता है (यस मेम) हूॅं क्या पढ़ाया है (मेम, रधुवीर सहाय की कविता पढ़ानी है 'सडक पर रपट') तो ठीक है इस कविता, पहली बार मैने आपको पढ़ाया था इससे पहले जो क्लास ली थी उसमें गिरिजा कुमार माथुर (जी मेम, यस मेम) और आज हम रधुवीर सहाय की कविता पढ़ेगे 'सडक पर रपट' (जी मेम) तो कविता से पहले आप यह बताइये की रचनाकार का परिचय कविता पठन उनकी सारी कविताएं पढने के बाद आप चाहेगें या कविता पढ़ने से पहले हम रधुवीर सहाय का परिचय आपको श्दे दें। (पहले चाहेगें, कविता पढ़ने से पहले) सुविधा हो जाती है आपको इससे (यस मेम) ठीक है तो रधुवीर सहाय मैं समझा देती हूॅं उनके बारे में, आपको बता देती हूॅं उसके बाद हम कविता पढायेगें (जी मेम) रधुवीर सहाय की कविताएं आपने जरूर पढ़ी होगीं (जी मेम) पत्रिकाओं में (जी) और स्कूल के स्तर पर भी कोर्स में रही हैं (जी मेम) मेरी जानकारी जहां तक है (जी मेम) कौन सी कविता थी कोर्स में (मेम ब्राहमदस) हां तो आपने तो बहुत कविता उनकी पढ ली हैं इससे पहले ही, हां (जी हां) तो एक समझ तो विकसित की होगी आपने रधुवीर सहाय की

(जी मेम) तो मुझे लगता है कि आसानी से आप समझ जायेगें। अच्छा रधुवीर सहाय की कविता मेरे ख्याल से आप सभी ने पढ़ी है (यस मेम, जी मेम) तो किस काल के कवि हैं रधुवीर सहाय (नई कविता के) बहुत अच्छा । रधुवीर सहाय पर थोड़ी सी संक्षिप्त जानकारी ही में दे पाऊंगी क्योंकि विस्तार से चर्चा तो हम जैसे हमेशा ही हम कवि की सारी कविताओं को पढ़ाने के बाद ही हम करेगें (जी, जी मेम) लेकिन कविता समझने में आपको आसानी हो तो थोड़ा सा उनके काव्य के मूल तत्व और उनका परिचय आपको देगें (जी मेम) रधुवीर सहाय पत्रकार भी रहे हैं मालूम होगा आपको (यस मेम) तो एक पत्रकार की जो सजगता होती है और एक कवि की संवेदनशीलता (जी मेम) एक पत्रकार की पहली दृष्टि भी है उनके पास और एक कवि की संवेदनशीलता भी है (जी मेम) और साथ में एक गहरा मानवीय बोध है (यस मेम) और इन तीनों के साथ रधुवीर सहाय सामाजिक बोध के स्तर पर आते हैं (जी मेम) तब कविता को रचते हैं यानि उनकी कविता का फलक जो है आप देखिये उस पे एक पत्रकार भी मौजूद है वहॉ, एक कवि भी है और एक लोकतांत्रिक मूल्यों का संरक्षक भी है (यस मेम) और वो किस तरह से लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण और सम्बर्द्धन की जो चिन्ता है एक पत्रकार की भी रहती है (यस मेम) प्रेस को चौथा स्तम्भ कहा जाता है मालूम है (यस मेम) तो चौथा स्तम्भ क्या करता है प्रेस का। किस तरह से लोकतांत्रिक मूल्यों की संरक्षा करता है।

छात्र – मेम वो पत्रकार जो है एक तो सूचना देता है और जागरूक बनाता है हमें और सबसे बडी ताकत ये है कि वो कहीं कुछ गलत धट रहा होता है तो वो प्रश्न करता है।

डा0 कुमुद शर्मा – लोकतांत्रिक मूल्यों का जहां हनन हो रहा है समाज में सामाजिक स्तर पर, राजनैतिक स्तर पर, आर्थिक स्तर पर उनको पत्रकार उठाता है (यस मेम) तो एक पत्रकार की चिन्ता होती है (यस मेम) तो चूंकि वो मूलतः पत्रकार भी हैं। कवि भी हैं रधुवीर सहाय, तो इस तरह से वो

लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षक की भूमिका में भी आते हैं। (यस मेम) पत्रकार की हैसियत से भी और एक कवि की हैसियत से भी (जी मेम) और कविता के क्षेत्र में जव वो आते हैं तो उनकी समूची कविता जो है। वो एक तरह से जो विनाश है विनाश का जो स्तर है आजादी के बाद अगर आप देखिए तो राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र में लगातार विसंगतियां प्रभावी होती चली जाती हैं । (यस मेम) विकृतियां आती चली जाती है तो उनकी जो कविता है रघुवीर सहाय की उन विकृतियों और विसंगतियों के विरोध की कविता है उसके विरोध में आते हैं विसंगतियों, पर विनाश जो है विनाश के विरूद्ध कार्यवाही के रूप में अपने संरचनात्मक क्रम को वो खडा कर देते हैं तो इस तरह से रघुवीर सहाय एक जो निराला और मुक्तिबोद्व की जो परम्परा है मर्मभेदी व्यंग्य विद्वरूप की जो परम्परा है (यस मेम) और इस परम्परा से भी एक अपना विशिष्ट काव्य मुहावरा वो चुनते हैं। व्यंग्य का एक अनूठा तेवर ले करके आते हैं रघुवीर सहाय (जी मेम) व्यथा और व्यंग का सन्निवेश है (यस मेम) यानि रघुवीर सहाय कहां से कविता को रचते है जव वो समाज को देखते है तो समाज में जो विसंगति है, विकृतियां है उनको देख करके एक जो कवि का मन है वो पसीजता है (यस मेम) और उसके भीतर एक व्यथा पैदा होती है (यस मेम) और एक अतिरिक्त चेतना भी है उनके पास उन्होने कहीं कहा भी है कि उनके पास एक अतिरिक्त चेतना है एक व्यथा है और जिसके कारण वो चाहते हैं कि हर चीज को दुरूस्थ करना चाहते हैं (यस मेम) एक नये ढंग से उसको सजाना चाहते हैं कहने का अभिप्राय है कि एक व्यथा जो उनके पास है जो कि सामाजिक विसंगतियों को देख करके पैदा होती है उस व्यथा के चलते है एक व्यग्रता है एक बैचेनी है समाज को बदलने की और वो समाज में परिवर्तन चाहते हैं (यस मेम) तो उनका जो एक पत्रकार है एक कवि है वो परिवर्तन की आकांक्षा से जुडा हुआ है (यस मेम) जहां तक उनका जीवन परिचय का सवाल है तो वो लखनऊ में पैदा होते हैं 1929 में (यस मेम) दिल्ली में उनका निधन होता है 1990 के

आस पास (यस मेम) और जीविका का सवाल जहां तक है तो जव वो पढ़ाई कर रहे थे लखनऊ विश्वविद्यालय में तो वो दौर था । 1929 में पैदाईश है जब युवा होगें तो आप अनुमान लगा सकते हैं कि कौन सा दौर है (यस मेम) वो दौर था जव कि शैक्षिक प्रागंण के जो युवा थे वो जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्र देव और लोहिया (यस मेम) हैं ना, उनकी समाजवादी अवधारणओं से जुड़े हुये थे (यस मेम) और रघुवीर सहाय ने भी लोहिया की जो समाजवादी अवधारणा है वहां से सामाजिक न्याय का सूत्र पकडा है (यस मेम) और उसकी डोर उन्होने कभी नहीं छोड़ी (जी मेम) पत्रकार के रूप में भी और एक सृजग के रूप में भी (यस मेम) उसके बाद वो पढ़ाई पूरी करने के बाद अज्ञेय द्वारा सम्पादित जो प्रतीक पत्रिका है उसके सम्पादन से जुड़ते हैं (यस मेम) फिर आकाशवाणी से जुड़ते हैं (जी मेम) आकाशवाणी का उन्हें वातावरण रास नहीं आता शुरू में, स्वत्रंत लेखन की तरफ जाते हैं । युग चेतना पत्रिका से जुड़ते हैं । अंग्रेजी की वाक पत्रिका से जुडते है फिर वो नवभारत टाइम्स जो कि समाचार पत्र है आज भी निकलता है उसके विशेष संवाददाता के रूप में काम करते हैं (यस मेम, जी मेम) दिनमान टाइम्स में वो आते हैं उसके सम्पादकीय विभाग से जुड़ते हैं और बाद में वो दिनमान के सम्पादक भी होते हैं। (जी मेम) तो इस तरह से उनका जो पूरा जीवन है वो पत्रकार और कवि के मिले जुले व्यक्तित्व से आगे बढ़ता है (यस मेम, जी मेम) और उन्होने जितना भी रचना कर्म किया है उसमें उन्होने निबंध भी लिखें हैं कहानियां भी लिखी और उनके कविता संग्रह भी प्रकाशित हुये है (जी मेम) इसके अलावा उन्होने अनेक विदेशी कृतियों का अनुवाद किया जिसमें शेक्सपीयर के नाटकों का उन्होने पद्यानुवाद किया (जी मेम) ठीक है, जो कि बहुत मुश्किल होता है (जी मेम) पोलिश उपन्यासों का भी उन्होने अनुवाद किया है (जी मेम) आपने देखा कि इन्होने निबंध संग्रह भी हैं इनके । (जी मेम) कविता के साथ साथ कहानियां भी लिखी है सामाजिक निबंध भी लिखे। और निबंधों में वो सामाजिक महत्व के प्रश्नों से बराबर टकराते हैं

(जी मेम) लेकिन उनकी पहचान किस रूप में बनती है मैने पहले ही आपको बताया (पत्रकार के रूप में) पत्रकार के रूप में और एक कवि के रूप में वो पहचाने जाते हैं (जी मेम) कविता के क्षेत्र में कब वो आते हैं एक समय होता है गिरिजा कुमार माथुर की जव हमने चर्चा की थी तो 1919 की पैदाईश थी उनकी (जी मेम) और 1938 मे उन्होने कविता मंच से पढ़ी थी और इनकी पैदाईश मैने आपको बताई 1929 है (जी मेम) हूँ और इन्होने कब कविता लिखना शुरू किया। कब उनके भीतर से अर्श पैदा हुई कि मैं कविता लिखूं (यस मेम) तो 1947 में हरवंश राय बच्चन को उन्होने सुना, और हरवंश राय बच्चन से वो बहुत प्रभावित हुये और एक वेदना के साथ उनका कंठ फूटा और कविता में वो आते हैं (जी मेम) यानि प्रेम और मस्ती के कवि हरिवंश राय बच्चन, आप सोचिए की रधुवीर सहाय की कविता का जो पढ़ेगें 'सड़क पर रपट' दूसरे किस्म की कविता है (यस मेम) लेकिन जब वो कविता के क्षेत्र में आते हैं तो वो बिल्कुल दूसरे रूप में आते हैं (जी मेम) यानि प्रकृति और प्रेम के उपादानों को लेकर के कविता की पगडंडी पर कदम रखते हैं जाहिर है कि अगर वो हरिवंश राय बच्चन से प्रभावित है तो उसी तरह की कविताएं लिखेंगें (जी मेम) तो शुरूवाती दौर की कविता जो है वो उनकी कैसी है प्रेम और प्रकृति की कविता है (जी मेम) यानि व्यैक्तिक घेरा वहाॅ भी है। (जी मेम) रधुवीर सहाय की शुरूवाती कविता में। और उनकी कविताएं आती हैं दूसरा सप्तक में, गिरिजा कुमार माथुर की कविताएं कौन से सप्तक में थी तार सप्तक में और ये संकलित होते है इनकी कविताएं संकलित होती है दूसरा सप्तक में। (जी मेम)और दूसरा सप्तक में इनका जो वक्त्व है और इनकी जो कविताएं है उनसे इनके पूरे रचनात्मक व्यक्तित्व का परिचय मिलता है (यस मेम, जी मेम) वो ये कहते हैं कि जिन्दगी में तीन चीजों की बड़ी जरूरत है आक्सीजन, मार्क्सवाद और अपनी वह शक्ल जो हम जनता में देखते हैं। (जी मेम) ये बहुत महत्वपूर्ण उद्धहरण है जो उनका बराबर कोट किया जाता है लेकिन यहां पर वो कहते जरूर हैं कि मार्क्सवाद की जरूरत है लेकिन वो

मार्क्सवाद को अपनी कविता पर गिलाफ की तरह चढ़ाते नहीं हैं (जी मेम) यह भी वो कहते हैं, गिलाफ की तरह उसको चढ़ाते नहीं हैं अपनी कविता, ओढ़ते नहीं है मतलब मार्क्सवाद को ओढ़ बिछा करके वो कविता को नहीं रचते है (जी मेम) ठीक है। लेकिन इसको महत्वपूर्ण मानते जरूर हैं (जी मेम) तो मूलतः वो किससे जुड़ते हैं लोहिया के सामाजिक न्याय से । लोहिया के समाजवादी अवधारणा से वो सामाजिक न्याय का सूत्र पकडते हैं जैसा कि मैने पहले आपको बताया । (जी मेम) तो दूसरा सप्तक में जो इनकी कविताएं है और उसमें जो उनकी आत्म स्वीकृति है उनका जो वक्तव्य है वो पूरा वक्तव्य जो है उनकी कविताएं, जो आगामी संसार है उनका कविताओं का उसका पूरा परिचय आप कह दीजिए संकेत देते हैं (जी मेम) बहुत शीध्र ही यानि कविता का जो उनका प्रारम्भिक चरण है रघुवीर सहाय का बहुत जल्दी वो इसको लांधते हैं और पूरे समग्र जीवन को लेकर के कविता में वो आते हैं (जी मेम) एक जगह वो उन्होने कहा है ना 'हम तो सारा का सारा लेगें,कम से कम वाली बात न हमसे कहिए' (जी मेम) तो एक रचनाकार के रूप में वो समग्र जीवन को अर्थवान बनाने में जुट जाते हैं। (जी मेम) और कविता के जरिये जो उनकी मुख्य चिन्ता है जैसा मैने पहले भी आपको बताया कि लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण की है और उनकी चिन्ता ये है जैसा उन्होने कहा है कि लोक तंत्र ने इंसान को शानदार जिन्दगी और कुत्ते के बीच चाव लिया है (जी मेम) यानि कहने को तो लोक तंत्र है लेकिन इस लोकतंत्र में एक तरफ क्या है वैभव है और दूसरी तरफ क्या है (अभाव) बिल्कुल इस तरह की जिन्दगी है दबी, कुचली, शोषित (जी मेम) तो ये जो एक अन्तराल है एक जो विरोध है जो असमानता है (जी मेम) वो रघुवीर सहाय को बराबर बैचेन करती हैं (जी मेम) और उनकी जो पक्षधरता है अगर आप देखिये आम आदमी के साथ जुड़ती है (जी मेम) कविता की जड़ें उनकी यथार्थ में हैं (जी मेम) और मानवीय यथार्थ को हुबहू जब कविता में रूपान्तरित करते हैं तो उनकी मुख्य चिन्ता किस के साथ है आम आदमी के साथ, उस आम आदमी

के साथ है जो कि इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में शोषित है, दलित है, पीड़ित है (जी मेम) ठीक है, जब हम कहते हैं कि लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षक की भूमिका में रधुवीर सहाय है (जी मेम) तो लोकतांत्रिक मूल्य क्या है हमारे । लोकतांत्रिक मूल्य है कि समान अधिकार समान अवसर (जी मेम) जहॉ वो देखते हैं कि लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन हो रहा है। वहॉ उनमें एक बैचेनी और व्यग्रता होती है और उनकी कलम जो है व्यंग्य और व्यथा को साथ ले के कविता रच देती है । (जी मेम) तो उनकी कविता में हम देखेगें की व्यथा और व्यंग्य का सन्निवेश एक विशिष्ट तरह का काव्य मुहावरा है (जी मेम) काव्य मुद्रा है (यस मेम) जो हमें दिखायी पड़ती है और उनकी व्यथा किसके साथ है। आम आदमी के साथ (जी मेम आम आदमी के साथ) तो मूलतः रधुवीर सहाय की कविता का जो मूल है। अगर आप कहें बहुत संक्षेप में तो वो यह है कि राजनीति की केन्द्रीयता में विसंगतियों का दर्शन कराती है (जी मेम) आजादी के बाद राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक स्तर पर जो विसंगतियां प्रभावित होती चली गयी। (जी मेम) और जिनके कारण विनाश की प्रकिया शुरू हो जाती है (जी मेम) देखिये रधुवीर सहाय का समय कौन सा है। रधुवीर सहाय का समय मोहभंग का समय है। (जी मेम) 1960 तक हम लोगों के मन में यह विश्वास था कि मनुष्य के सिंद्वात और व्यवहार के बीच की जो खाई है उसको कोई न कोई मानवीय सरोकार जो है। उसके (पाट देगा) पाट देगा। (जी मेम) लेकिन 1960 के बाद जो व्यापक मोहभंग होता है उससे एक चीज बहुत स्पष्ट हो जाती है कि जो व्यापक विकृतियां है व्यापक विसंगतियां है अब इन इनसे हम निपट नहीं पायेगें (जी मेम) एक विनाश की प्रकिया शुरू हो चुकी है और एक संत्रास बोध उभर करके आ गया है तो रधुवीर सहाय का समय ये था, और इन सारी जो विनाश की जो प्रकिया शुरू हो गयी है उसके विरूद्व वो कविता के मोर्चे पर पत्रकारिता के मोर्चे पर डट कर हमारे सामने आते हैं। रधुवीर सहाय । (जी मेम) ठीक है और रधुवीर सहाय ये तो उनकी अन्तर वस्तु किस तरह की हमने बताया । रधुवीर सहाय

के किस तरह के काव्यानुभव उनका किस तरह का है। लेकिन वो काव्यानुभव किस बुनावट में आता है अगर हम बात करें तो हमने पहले आपको बताया कि व्यथा और व्यंग्य उनके का विशिष्ट मुहावरा है उनके काव्य का (जी) दूसरा इनमें एक और चीज है कि वो कहा जाता है कि पत्रकारिता शैली की कविताएं हैं जो कविता हम पढ़ेगें वो भी आपको इसी तरह की प्रतीत होगी कविता 'सड़क पर रपट' जैसा की शीर्षक से ही लग रहा है (जी मेम, यस मेम) और उन पर आरोप भी लगे उनको कहा गया कि जैसा हमने कहा कि व्यंग्य है इनकी कविता में व्यथा है (जी मेम) तो कहा गया इनकी कविता पर कि ये तो व्यथा और व्यंग्य बिडम्बना का प्रसहन हैं इनकी कविता में, या मध्य वर्गीय व्यक्ति का मनो विनोद है इसमें (जी मेम) लेकिन अगर गौर कीजिए इनकी कविता पर तो आप पायेगें की ये ठीक है कि इनकी कविता जो है एक सम्पादन कौशल आप को उसमें नजर आयेगा (जी मेम) एक खबर का शास्त्र भी आपको नजर आएगा उसमें (यस मेम) क्योंकि जहां पर वो एक एक शब्द को चुनकर रखते है उनकी एक कविता भी है 'दो अर्थो का भय' (यस मेम) यानि वो एक एक शब्द को ढूंढ ढूंढ के शब्दों को लेकर आते है ऐसे अर्थ को कविता में रखना चाहते हैं रधुवीर सहाय जहॉ पर उसका दूसरा अर्थ ही न हो (जी मेम) है ना तो अर्थ के प्रति बहुत, शब्द के प्रति बहुत सजग है, नया अर्थ ढूंढना चाहते हैं (जी मेम) और ऐसा अर्थ ढूंढना, ऐसा शब्द ढूंढना चाहते हैं कि वो सम्पूर्ण समाज के यथार्थ को खोल करके रख दें। शब्द को लेकर के बहुत सजग है वो। शब्द के प्रति एक अतिरिक्त सजगता है (जी) लेकिन उनकी कविताएं केवल खबर के शास्त्र से या सम्पादन कौशल से गढ़ी हुई कविताएं नहीं है बल्कि वो कविताएं जन पक्षधरता की कविताएं हैं (जी मेम) जहां वो जनता के साथ जुडते हैं। गहरे मानवीय सरोकारों के साथ समाज के सामने आते हैं (जी मेम) तो साहित्य का मोर्चा हो, चाहें पत्रकारिता का मोर्चा हो दोनो ही मोर्चे पर वो जन जीवन की जो भयावता है जो समसमायिक संसार है इसमें जो बहुत बिडम्बनाएं हैं विद्रुप्ताएं है उनके कवि

बन करके उभरते है और उन विद्रुप्ताओं के विरोध में उनकी कविता जो है खड़ी पायी जाती है (यस मेम, जी मेम) जो एक हत्या की संस्कृति पनप गयी है इस व्यवस्था विरोध के चलते । मनुष्य विरोधी जो स्थितियां हो गई है उनकी उनका पूरा रचनात्मक संसार इस हत्या की संस्कृति के विरोध में खड़ा हुआ है (जी मेम) तो ये रघुवीर सहाय का एक छोटा सा परिचय मैने आपको दिया और अब हम उनकी कविता को पढ़ेगें उसकी व्याख्या करेगें । लेकिन उससे पहले हम 'सडक पर रपट' कविता का पाठ सुनते हैं जो कि लक्ष्मी शंकर बाजपेयी इसका पाठ कर रहे हैं और आप, मैं चाहूंगी बहुत ध्यान से आप पाठ सुने क्योंकि नई कविता आजादी के बाद की कविता भले ही जो है ऐसा लगे कि वो पहले परम्परागत कविता से अलग उसका शिल्प है और वो बड़ी आसान सी है क्योंकि गद्यात्मक कविता है बहुत आसानी से समझ में आ जायेगी। लगती बहुत सरल कविता है लेकिन आप जानिये की उस कविता में अन्तः प्रवेश करना इतना आसान नही होता (यस मेम) हूँ और उसके बहुत, शब्दावली बहुत आसान लगेगी रघुवीर सहाय की भी आप देखेंगें (यस मेम) लेकिन उस कविता के मर्म तक पहुंचने के लिये एक चेतना आपको चाहिए एक समझ चाहिए (जी मेम) और उसके लिये जरूरी है कि आप कविता के पाठ को ध्यान से पढ़ें (यस मेम) और तभी आप उसके अर्थ तक आसानी से पहुंच पायेगें। तो कविता सुनते हैं (जी मेम, यस मेम)

सड़क पर रपट

देखो सड़क पार करता है पतला दुबला बोदा आदमी
देखो सड़क पार करता है पतला दुबला बोदा आदमी
आती हुई टरक का इसको डर नहीं, आती हुई टरक का इसको डर नहीं,
या कि जल्दी चलने का इसमें दम नहीं रहा
या कि जल्दी चलने का इसमें दम नहीं रहा
ऑख उठा देखता है वो डरेवर को (आम आदमी की भाषा)

कि ऑख उठा देखता है वो डरेवर को

देखों मैं ऐसी ही चल पाता हूॅं

देखों मैं ऐसी ही चल पाता हूॅं

मैने इस तरह के आदमी इस बरस पिछले के मुकाबले बहुत देखे

मैने इस तरह के आदमी इस बरस पिछले के मुकाबले बहुत देखे

जिनको खाने को पूरा नहीं मिला वरस भर

जिनको खाने को पूरा नहीं मिला वरस भर

कैसे भी पहुंच जाते है दफतर वक्त से

कैसे भी पहुंच जाते है दफतर वक्त से

घर लौट आते हैं देर सवेर, घर वालों को कभी अस्पताल में पड़े नहीं मिलते हैं

घर लौट आते हैं देर सवेर, घर वालों को कभी अस्पताल में पड़े नहीं मिलते हैं

मैंने इस वर्ष देखे एक खास किस्म के नौजवान रंगे चुंगे चुस्त

मैंने इस वर्ष देखे एक खास किस्म के नौजवान रंगे चुंगे चुस्त

उठा कर अंगूठा रोकते हुये मोटर, सवारी का हक भाई चाराना मांगते

मैंने इस वर्ष देखे एक खास किस्म के नौजवान रंगे चुंगे चुस्त

उठा कर अंगूठा रोकते हुये मोटर, सवारी का हक भाई चाराना मांगते

इस वर्ष कारे भी बढ़ी, नौजवान भी

इस वर्ष कारे भी बढ़ी, नौजवान भी

इस वर्ष मैने देखा, इस वर्ष मैनें देखा बल्कि एक दिन देखा

एक दिन अस्पताल, एक दिन स्कूल के सामने खड़ा हुआ एक लंगडा

बुढ़ा, एक दिन नन्हा लड़का पार जाने को एक एक घंटे इंतजार में,

इस वर्ष मैने देखा, बल्कि एक दिन देखा

एक दिन अस्पताल, एक दिन स्कूल के सामने खड़ा हुआ एक लंगडा

बुढ़ा, एक दिन नन्हा लड़का पार जाने को एक एक घंटे इंतजार में कि कोई कार वाला गाड़ी धीमी करे,
कि कोई कार वाला गाड़ी धीमी करे
इस वर्ष मैने और भी देखा कुत्ते जगह जगह कुचले
इस वर्ष मैने और भी देखा कुत्ते जगह जगह कुचले
वे ठिठक गये थे जहां थे बीच रस्ते पर उनके न ताकत थी, उनके न इच्छा थी कि दौड़कर बच जाये, उनके न ताकत थी, उनके न इच्छा थी कि दौड़कर बच जाये, ये रपट यहीं खत्म होती है
चाहें एक मामूली बात और जोड़ ले कि इस वर्ष मैंने और अधिक मोटर मालिक देखे, नियम तोडकर बायें हाथ से अगली गाड़ी से अगिया जाते हुये,
उन लड़को का यहां जिक्र नहीं किया गया
उन लड़को का यहां जिक्र नहीं किया गया जो इन्हे देखकर खून का घूंट पीकर रह जाते हैं क्योंकि उनमें से कोई दुर्घटना में शामिल नहीं हुआ।

डा0 कुमुद शर्मा— आपने कविता सुनी (यस मेंम) कैसी लगी कविता (बहुत अच्छी) आपको ऐसा नहीं लगा कि कविता में जो दृश्य उभर करके आता है वो आप आये दिन इस दृश्य को देखते हैं सड़क पर (जी मेम, यस मेम, ऐसा लगा) जैसे हुबहू उतार दिया हो आंखों देखा बयान जिसको कहते हैं ना, (यस मेम) तो पत्रकार जिस तरह से एक रिपोर्ट लिखता है उसी शैली में यह कविता लिखी गयी है। मैं बता दूं कि ये कविता उनके कौन से संग्रह से ली गई है (जी मेम) हंसो हंसो जल्दी हंसो (हंसो हंसो जल्दी हंसो, यस मेम) और एक देह भाषा भी होती है यह मालूम है आपको (जी मेम) एक आप मुंह से बोलते हैं (जी मेम) हूँ , एक लिखने की, लिखते हैं आप उसमें। लेकिन एक न बोलते हैं ना लिखते हैं लेकिन फिर भी आप कोई चीज सम्प्रेषित कर देते हैं (जी मेम) हूँ, एक अभिव्यक्ति के कई स्तर होते हैं, (जी मेम) अभिव्यक्ति के कई ढ़ंग होते हैं। तो हंसी मुस्कुराहट यह भी अभिव्यक्ति का एक ढ़ंग है

(यस मेम, जी मेम) है ना, और ये हंसी जो है इस पूरे संग्रह में हमने देखा है कि जो हंसी है जो कि विडम्बनाओं का शिकार हो गयी है (जी मेम) हूँ, आदमी कई बार न हंस सकता है ना रो सकता हैं। हंस सकता है लेकिन उसमें कितना रूदन है, इन सारी चीजों पर कवि ने लिखा है। उस हंसी को केन्द्र बना लिया है (जी मेम) और उस हंसी के माध्यम से अपने समय की विडम्बनाओं का जिस तरह से साक्षात्कार कराते हैं या अपने समय की जटिल होती हुई स्थितियां जो हैं, अराजक होती हुई स्थितियों से किस तरह साक्षात्कार कराते हैं। बहुत सुन्दर नमूना है उनका यह संग्रह – हंसो हंसो जल्दी हंसो (जी मेम, यस मेम, मैने यह पढ़ा भी है) पढ़ा है । 1975 में यह छप करके आया है (यस मेम) तो बहुत अच्छी कविताएं हैं (जी मेम) फिलहाल तो एक ही कविता इस संग्रह से आज कविता करा रहे हैं हम आपको, इसके बाद ही आप जिन जिन्होने नहीं पढ़ा है इस संग्रह को (जी मेम) वो भी मैं चाहूंगी कि लाइब्रेरी से इसको इशु कराये नहीं तो खरीद सकते हैं आप और इसको जरूर पढ़ियेगा। (जी मेम) ये और एक लिखने का (जी मेम) कारण आपको पढ़ना है। (जी मेम) दोनो पर हम कभी बातचीत करेगें, हूँ। अब इस कविता को सुन लिया है। थोड़ी थोड़ी लाइनें मैं पढूंगी और उसकी मैं व्याख्या करूंगी (जी मेम)

देखो सडक पार करता है पतला दुबला बोदा आदमी, आती हुई टरक का इसको डर नहीं (यस मेम) या कि जल्दी चलने का इसमें दम नही था। आंख उठाकर देखता है वो डरेवर को देखो मैं ऐसे ही चल पाता हूँ (जी मेम) एक खास मनोस्थिति है अगर आप देखिये (जी बिल्कुल बिल्कुल मेम) आजादी के बाद की कविता नई क्यों है। (जी मेम) क्योंकि एक नयी मनः स्थिति की कविता है। (जी मेम) नये मूंड की कविता है (जी मेम) कहा गया है कि नये राग सम्बंध की कविता है (जी मेम) तो इसमें भी आप देखिये एक (जी मेम) मनः स्थिति है (जी मेम) मनः स्थिति किस की है पतला दुबला बोदा आदमी पतला दुबला बोदा आदमी कौन है। आम आदमी (आम आदमी, जी मेम)

सड़क पर अन्तः विरोध देखिये और ये अन्तर विरोध किसका है लोकतांत्रिक व्यवस्था में (यस मेम) जो अन्तर विरोध है जो विसंगतियां है, जो बिडम्बना है उसका बहुत सुन्दर विषय इस सडक पर रपट के माध्यम से रधुवीर सहाय उपस्थित करते हैं। (जी जी) और इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में जो आम आदमी है उसकी लाचारी (यस) उसकी दयनीय स्थिति (जी) उसकी विवशता बहुत सुन्दर ढ़ंग से इस तरह बहुत मार्मिक उसका चित्रांकन इस कविता में हुआ है। (जी मेम यस मेम) हूँ दुबला पता आदमी सड़क पार कर रहा है (यस मेम, जी मेम) अब आप वो दृश्य अपनी आंखों के सामने लाइये (जी मेम) आप देखते भी हैं (जी मेम) इस समय उसको साकार कर लीजिये (जी) कि उधर से वो पार कर रहा है अशप्त है, विवश है, दयनीय है, धीरे धीरे पार कर रहा है (यस मेम) लेकिन जो युवा होता है, जिसमें शक्ति है दौड़ के पार कर जाता है अगर सड़क आ रही है (जी) उधर से बहुत तेज रफतार से सड़क आ रही है। लेकिन ये आती हुई ट्रक का इसको डर नही रहता (यस मेम) और जैसे वो संकेत कर रहा हो कि मैं तो ऐसे ही पार कर पाता हूँ सड़क को (जी मेम) तो यहां पर संकेत किस बात का है। यह सड़क आप समझ लीजिये कि लोकतंत्र की सड़क है (यस मेम) और इस सड़क पर असमानता है (जी मेम) एक तेज रफतार और एक (स्लो है) धीमी रफ्तार है और उस असमानता का संकेत पहले ही चरण में कविता के दे देता है (जी मेम) यानि वो मैं तो ऐसे ही सड़क पार कर पाता हूँ। तो यहॉ पर अब धीरे ध ीरे आप जब आप में ऊर्जा होती है, शक्ति होती है उत्साह होता है तो अपने आप बूढ़े व्यक्ति में भी ऊर्जा आ जाती है (जी मेम) बीमार व्यक्ति में भी तेजी आ जाती है (जी मेम) लेकिन यहां वो तेजी गायब है (गायब है) हताशा की स्थिति है निराशा की स्थिति है कोई विश्वास यहां दिखाई नहीं देता यानि उसका विश्वास खंडित हो गया है (जी मेम) है ना, जो बराबर बदलते हैं मूल्य हैं जो विकृत होती हुई स्थितियां है, (यस मेम) जो मनुष्य विरोधी व्यवस्था है उसने इस आम आदमी का विश्वास खंडित कर दिया है (जी मेम)

–मैने इस तरह के आदमी इस बरस पिछले के मुकाबले बहुत देखे जिनको खाने को पूरा नहीं मिला बरस भर, कैसे भी पहुंच जाते हैं दफ्तर वक्त से, घ ार लौट आते हैं देर सबेर घर वालों को कभी अस्पताल में पड़े नहीं मिलते– (यस मेम) देखिये कितना मर्म है इन पंक्तियों में कि दिन पर दिन ये आम आदमी की जो पीड़ा है उसमें वो तीव्रतर होती चली जा रही है (जी मेम) और इसमें संख्या में ईजाफा भी होता चला जा रहा है (जी) तो वो कहते हैं मैने ऐसे लोगों को देखा है जिनको साल भर खाने को नहीं मिलता (यस मेम) यानि इस लोकतांत्रिक व्यवस्था का संत्रास्त देखिये कि इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में जिसमें समान अवसर मिलने चाहिये, समान अधिकार होने चाहिये , वहॉ एक बहुत बड़ा तबका गरीबी की सीमा रेखा के नीचे का जीवन जी रहा है जिसको भर पेट खाने को भी नहीं मिलता (नहीं मिलता) ऐसे लोगों की संख्या बढ़ रही है लेकिन फिर भी वो तबका जो है वो बीमारी की स्थिति में भी आराम का अवसर उसको (नहीं मिलता) नहीं मिलता अगर वो बीमार है अगर दफ्तर नहीं जायेगा या काम पर नहीं जायेगा तो उसे मालूम है आज वो आधे पेट खाता है कल चार दिन भूखा रहेगा (जी) तो कितना विवश है कितना लाचार है कि शारीरिक कष्ट के बाबजूद उसे वहां पहुंचना पड़ता है (जी मेम) – मैने इस वर्ष देखे खास किस्म के नौजवान रंगे चुंगे चुस्त – अब अन्तर विरोध देख्यिे, विरोधाभास देखिये लोकतांत्रिक व्यवस्था का, – उठाकर अंगूठा रोकते हुये मोटर, सवारी का हक भाई चाराना मांगते– अब अगर आप सड़क पर देख्यिे तो जब लिफ्ट मांगते है आपने देखा होगा तो कोई तो रंगा चुगा नौजवान है तो वो आपने देखा होगा कि अपने साथ के यंग लड़कियों को आप लिफ्ट दे देगें, लडको को लिफ्ट दे देगें लेकिन कोई बुढ़ा आदमी अशस्त है उसको लिफ्ट के लिये गाडी जल्दी नहीं रूकेगी (जी मेम) देखा है ना। और बहुत गरीब आदमी उसके लिये कोई गाड़ी नहीं रोकेगा (जी मेम) क्यों नहीं रोकेगा क्योंकि क्लास का अंतर है (यस मेम) एक क्लास का भाईचाराना होता है एक वर्ग खास का भाई चाराना होता है (यस मेम) एक

बड़ी गाड़ी है आ रही है कोई नौजवान चला रहा है या और कोई व्यक्ति चला रहा है और कोई अंगूठे के ईशारे से बहुत स्टाईल में रोकता है तो गाड़ी वहां रूक जाती है (जी मेम) लेकिन गरीब आदमी के लिये गाड़ी नहीं रूकेगी (नहीं रूकेगी) हूॅं ठीक है, तो असमानता (जी मेम) जो एक खास वर्ग है उसमें समानता है और एक दूसरे का वो साथ भी निभाते हैं उनका हक भी देते है साथ भी देते है और व्यवस्थाजनित दुर्भिसंध्यिां है उसमें भी उनकी बंदरवांट चलती हैं (जी) लेकिन जो शोषित व्यक्ति है आम व्यक्ति है जो आम आदमी है वो क्या है वो वंचित तबका है (जी) उन चीजों से वंचित रहता है। 'इस वर्ष मैने देखा बल्कि एक दिन देखा, एक दिन अस्पताल, एक दिन स्कूल के सामने खड़ा हुआ एक लंगडा बुढ़ा, एक दिन नन्हा लड़का पार जाने को एक घंटे इंतजार में कि कोई कार वाला गाड़ी धीमी करें, इस वर्ष मैने और भी देखा– वो जो बात मैने आपको बतायी (जी) कि नन्हें बच्चे के लिये कोई गाड़ी नहीं रोकता है (जी) गरीब आदमी के लिये कोई गाड़ी नहीं रोकता क्योंकि उनमें एक क्लास का अंतर है (जी) – इस वर्ष मैने और भी देखा कुत्ते जगह जगह कुचले, वे ठिठक गये थे जहां थे बीच रास्ते पर, उनके न ताकत थी, उनकी न इच्छा थी कि देखकर बच जाये (यस मेम, जी मेम) अब देखिये की आम आदमी के संकेत के लिये कुत्ते को लेकर आते हैं (जी) जैसा मैने पहले कहा कि उन्होने कहा ना कि लोकतंत्र में इंसान को शानदार जिंदगी और कुत्ते के बीच चाव लिया है (जी) यहां पर भी वो यह कि उन्होने कुत्ते जगह जगह यानि आम आदमी इस लोकतांत्रिक व्यवस्था की जो सड़क है उस पर बराबर लगातार उसके अस्तित्व को कुचला जा रहा है उसकी अस्मिता को कुचला जा रहा (जी) उसका कोई वजूद नहीं है (यस मेम) जो आम आदमी है ठिठक गये थे बीच रास्ते में (जी मेम) यानि उनको गन्तव्य तक नहीं पहुंच पा रहे है (जी मेम) उनको जीवन की मंजिल नहीं मिल रही है (जी मेम) क्योंकि सडक है सडक पर काफिला चल रहा है तेज गति से (जी मेम) तो जो तेज गति से उनके साथ भाईचाराना कर सकते हैं वो तो

बढ़ जाते हैं वो अपनी मंजिल तक पहुंच जाते हैं (जी) लेकिन आम आदमी जो है उसे जीवन की मंजिल नहीं मिल रही है (नहीं मिल रही है) और वो ठिठक करके खड़ा हो गया है (जी मेम) ये रपट यही खत्म होती है और चाहें एक मामूल बात और जोड़ लें कि इस वर्ष मैने और अधिक मोटर मालिक देखे, नियम तोड़कर बायें हाथ से अगली गाड़ी से अगिया जाते हुये (यस मेम) – और मोटर मालिक का मतलब ये है पूजींपति (जी मेम) धनाढ़य वर्ग (जी मेम) तो इस लोकतंत्र में उन्होने पाया कि धनाढ़य वर्ग है (यस मेम) जो सारे नियम कानून को तोड़ करके जीवन में आगे बढ़ रहा है (यस मेम) बिना परवाह किये हुये कि आम आदमी का क्या होगा। आम आदमी को वंचित करें उसको दबाये, उसको कुचले लेकिन उसको आगे बढ़ जाना है (जी मेम) या उन लड़कों का यहां जिक्र नहीं किया गया जो इन्हे देखकर खून का घूंट पीकर रह जाते हैं क्योंकि उनमें से कोई दुर्घटना में शामिल नहीं हुआ है (नहीं हुआ है) एक स्थिति आपने देखी होगी सड़क पर, और ये जो अन्तिम तीन लाइने है एक अराजक स्थिति का बोध कराती है सड़क पर । उन लड़कों का यहां जिक्र नहीं किया गया जो इन्हें देखकर खून का घूंट पी जाते हैं क्योंकि उनमें से कोई दुर्घटना में शामिल नहीं हुआ। (नहीं हुआ) यानि ये एक वर्ग है वो चाहता है इस वर्ग का अस्तित्व ही नही चाहता। वो चाहता है कि ये बिल्कुल दब जायें कुचल जायें और अगर ऐसा नहीं होता तो उनके भीतर एक गुस्सा पनपता है (यस मेम) एक क्रोध पनपता है यानि इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में। ऐसी व्यवस्था जो न दुर्भिसंधियां है जिसमें जो धनाढ़य है जो पूंजीपति है केवल उनके हितो का संरक्षण होता है (जी मेम) और जो आम आदमी है उसके हितों की कोई चिन्ता नहीं। उनके हितों पर चोट पहुंचा करके, और उनके हितों पर चोट नही लगती तो उनके भीतर गुस्सा आता है। उनके हितो को चोट पहुंचा करके एक खास विशिष्ट वर्ग के हितों का सरंक्षण किया जा रहा है (जी मेम) तो इस कविता का हमने देखा की एक मूल जो केन्द्र मे भाव था उसको मैने बताया । अब इसमें आप

देखिये कि जो आम आदमी की परिकल्पना इस कविता में है और आम आदमी और भी कवियों की कविताओं में आता है (जी) किस की कविताओं में आता है (नागार्जुन) हां बिल्कुल (निराला की कविताओं में आने लग गया, भिक्षुक है – वह तोड़ती पत्थर) अच्छा ये एक आम आदमी है इसमें, और आधुनिक हिन्दी कविता में अगर मैं बात कहूँ तो आम आदमी की परिकल्पना और भी जगह है (यस मेम, जी मेम) हूँ, तो आप को कोई आम आदमी की परिकल्पना याद आ रही है कि आप किस किस तरह का आम आदमी और कविताओं में आया, और कवियों की कविताओं में आया (नागार्जुन जी मेम, नागार्जुन) हॉ महेन्द्र ने बिल्कुल ठीक कहा, और रूचिका (निराला की कविताओं में है जैसे भिक्षुक और वह तोड़ती पत्थर) और नये कवियों में किसी और की कविता में है (मेम मुक्तिबोध) हॉ बिल्कुल सही (और धूमिल) आपको कोई अन्तर दिखायी दिया उनके मुक्तिबोध के आम आदमी में (जी मेम) और रधुवीर सहाय के आम आदमी में या धूमिल के आम आदमी और रधुवीर सहाय के आम आदमी में

रूचिका –मेम रधुवीर सहाय एक ही कविता के अन्दर जो आम आदमी दिखाया गया है उसकी जस्ट एक स्थिति का वर्ण किया गया है उसकी ये हालात है दयनीय स्थिति है (हूँ हूं) क्योंकि अगर हम मुक्तिबोध के अन्दर अंधेरे का अध्ययन करते है तो हम देख रहे हैं कि वहां पर जिस नायक की कल्पना की जा रही है जो आम जन की कल्पना की जा रही है उसमें चेतना है लेकिन वो चाह करके भी कुछ नहीं कर पा रहा। वो जागरूकता उसमें मौजूद है लेकिन वे व्यवस्था से इस प्रकार हताश और बंधा हुआ है कि वो कुछ नहीं कर पा रहा है

डा0 कुमुद शर्मा – हताश तो यह भी है महेन्द्र आप बतायेगें (मतलब दोनो में मेम, मतलब मुझे एक ही चीज दिखती है कि मतलब हताश है निराशा है) हां हां (दोनो में मतलब) हां लेकिन देख्यि आम आदमी होगा अगर सामाजिक

यथार्थ को आप चित्रित कर रहे है। यथार्थ की जड़ें हैं वहां पर तो हताश तो होगा (यस मेम) क्योंकि आजादी के बाद की जो मोहभंग की स्थितियां है वो हताश करने वाली है (यस मेम) संत्रास्त बोध की स्थिति जिसमें एक भय है असुरक्षा है (जी मेम) वो तो हमें दिखायी देगी लेकिन अगर आप गौर करिये तो मुक्तिबोध का है या धूमिल का है तो वहां एक आम आदमी भी है लेकिन जैसी धर्मवीर भारती की बात करते है (जी मेम) कि मैं रथ का टूटा पहिया हूॅं लेकिन मुझे फेकों मत, क्या जाने इतिहास की गति सहसा फीकी पड़ जाने पर इस टूटे हुये पहिये का आशय ले (जी मेम) यानि यहां आम आदमी अपने अस्तित्व के प्रति सचेत है और जानता है कि मैं इतिहास की गति को बदल सकता हूॅं (जी) लेकिन यहां जो आम आदमी है (जी) वो हताश है एक जुझारू जो आम आदमी होता है ना, (यस मेम) वो यहां दिखायी नही देता (यस मेम) इसको कहते है कि बल्कि वो विकटिम है (यस मेम, जी मेम) शिकार है, संगतियों का शिकार है (यस मेम) तो उसके भीतर एक ऊर्जा जैसे वो आती हुई टरक का उसको आती हुई ट्रक का उसको डर नहीं है (जी मेम) तो बिल्कुल विश्वास खंडित हो चुका है (जी मेम) तो एक जुझारूपन उसमें नहीं दिखायी देता। आक्रोश, उसकी मुठ्ठियां जो है वो आक्रोश से बंधी हुई नहीं है आक्रोश के पंजे वहां नहीं दिखायी देते रहे है आम आदमी में (जी मेम) ठीक है, अच्छा एक चीज और मैं बताना चाहती हूॅं कि इस पूरी कविता को देखिये तो इसमें एक कथा तत्व नाटकीयता आपको मिलेगी (यस मेम) व्यथा और व्यंग्य का सन्निवेश है कथा तत्व और नाटकीयता है तो मैं समझती हूॅं कि कविता काफी हद तक आपको समझ में आ गयी होगी (जी मेम, बिल्कुल जी मेम) यानि विसंगतियों को इस मायने में रघुवीर सहाय बड़े हैं कि विसंगतियों का दर्शन तो इन्होने कराया है लेकिन भले ही आक्रोश न हो इसमें, इस आम आदमी में जुझारूपन न हो लेकिन कहीं न कहीं इस कविता के मूल से ध्वनि निकल रही है कि रघुवीर सहाय लोकतांत्रिक मूल्यों का सरंक्षण चाहते हैं और इस व्यवस्था में बदलाव चाहते हैं (जी मेम) बदलाव

की तत्परता हमें इस कविता में दिखायी देती है (दिखायी देती है) ठीक है (एक आम आदमी के जैसे विद्रोह है तो वहां पे नागार्जुन कहते है कि छीन लाये हैं उनसे दुनाली बन्दूक और खुद चलाना सीखेंगें) हां तो वो चीज यहॉ नदारत है बहुत अच्छी, बहुत अच्छी बात कही महेन्द्र ने (जी मेम) तो यह कविता समझ में आ गयी आपको चलो अब नेक्स्ट क्लास में हम कल मिलते हैं (जी मेम)

अभी आप सुन रहे थे एम0ए0 हिन्दी के अंतिम वर्ष के विकल्प पेपर रधुवीर सहाय पर व्याख्यान। व्याख्यान दे रहीं थी दिल्ली यूनीवर्सिटी के हिन्दी विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डा0 कुमुद शर्मा । ये प्रस्तुति कामनवेल्थ एजुकेशनल मीडिया सेन्टर फार एशिया की थी जिसमें सहयोग दिया वन वर्ल्ड साऊथ एशिया ने । प्रस्तुतकर्ता – करूणा श्रीवास्तव